संत कबीर नगर जनपद की भूमि उपयोग में परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन

अनिस सिंह, शोध छात्र
डॉ. दुर्गावती यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग,
भूगोल विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उ.प्र. ।

सारांश : भूमि उपयोग में परिवर्तन किसी क्षेत्र की भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में समय के साथ घटित होने वाले उन परिवर्तनों को अभिव्यक्त करता है, जिनके अंतर्गत भूमि के विभिन्न उपयोग जैसे - कृषि, वन, चरागाह, परती भूमि, आवासीय, औद्योगिक एवं अन्य गैर-कृषि कार्य अपन स्वरूप एवं विस्तार बदलते रहते हैं। यह परिवर्तन आकस्मिक तथा एकांगी न होकर प्राकृतिक परिस्थितियों एवं मानवीय गतिविधियों की संयुक्त क्रिया का परिणाम होती है। जलवायु, मृदा की प्रकृति, स्थलाकृतिक स्वरुप तथा जल संसाधन मुख्यतः भूमि उपयोग की आधारभूत सीमाएँ निर्धारित करते हैं, तो वहीं जनसंख्या वृद्धि, नगरीकरण, औद्योगीकरण, परिवहन तंत्र का विकास, कृषि तकनीकी परिवर्तन तथा सरकारी नीतियाँ भूमि उपयोग में निरंतर गतिशीलता उत्पन्न करती हैं। अतः संत कबीर नगर जनपद में भूमि उपयोग में हो रहे परिवर्तनों का भौगोलिक अध्ययन न केवल वर्तमान भूमि संसाधन संरचना को समझने में सहायक है, बल्कि सतत एवं संतुलित विकास की दिशा में भविष्य की योजना निर्माण प्रक्रिया के लिए भी अत्यंत आवश्यक आधार प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : भूमि उपयोग परिवर्तन, वन, चारागाह, परती भूमि, कृषि,

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में संत कबीर नगर में विकासखण्ड स्तर पर भूमि उपयोग परिवर्तन का कालिक एवं क्षेत्रीय विश्लेषण के माध्यम से भौगोलिक अध्ययन का प्रयास किया गया है। जब भूमि का उपयोग मानव अपनी आवश्यकतानुसार कर रहा है तो उस भू-भाग के लिए 'भूमि उपयोग' शब्द का प्रयोग उचित होगा। स्टैम्प के अनुसार, भूमि उपयोग से तात्पर्य भूमि की सतह पर मानव द्वारा किए जाने वाले उन सभी कार्यों और क्रियाकलापों से है, जिनके माध्यम से भूमि का प्रयोग कृषि, आवास, उद्योग, परिवहन, वाणिज्य तथा अन्य आर्थिक-सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है। यह परिभाषा इस बात पर ज़ोर देती है कि भूमि उपयोग मानव गतिविधियों का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब होता है और समय व आवश्यकता के अनुसार इसमें परिवर्तन होता रहता है। भूमि किसी भी क्षेत्र की सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संपदा है, जिस पर मानव की आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियाँ आधारित होती हैं। वर्तमान समय में तीव्र जनसंख्या दबाव और आर्थिक विकास की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण कृषि भूमि का गैर-कृषि उपयोगों की ओर रूपांतरण एक प्रमुख प्रवृत्ति के रूप में उभर कर सामने आया है। आवासीय विस्तार, सड़क एवं अन्य अधोसंरचनात्मक परियोजनाएँ, औद्योगिक इकाइयों की स्थापना तथा सेवाक्षेत्र का विस्तार भूमि उपयोग प्रतिरूप को तीव्र गति से परिवर्तित कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप एक ओर जहाँ आर्थिक गतिविधियों में विविधता और क्षेत्रीय विकास को प्रोत्साहन मिलता है, वहीं दूसरी ओर कृषि क्षेत्र में संकुचन, वन क्षेत्र में कमी, पर्यावरणीय असंतुलन तथा भूमि क्षरण जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न होती हैं। परती एवं बंजर भूमि का पुनः उपयोग कुछ क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन का संकेत देता है, जबकि अन्य क्षेत्रों में भूमि की उत्पादकता में गिरावट दीर्घकालिक चुनौती बनकर उभरती है।

भूमि उपयोग में परिवर्तन का भौगोलिक अध्ययन न केवल क्षेत्रीय संसाधनों के वर्तमान स्वरूप को समझने में सहायक होता है, बल्कि मानव और भूमि के बीच अंतःक्रिया को स्पष्ट करते हुए यह दर्शाता है कि किस प्रकार सामाजिक-आर्थिक आवश्यकताएँ प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव उत्पन्न करती हैं। अतः सतत विकास की दृष्टि से भूमि उपयोग में हो रहे परिवर्तनों का संतुलित एवं नियोजित मूल्यांकन आवश्यक है, ताकि विकास और पर्यावरण संरक्षण के मध्य सामंजस्य स्थापित किया जा सके और भावी पीढ़ियों के लिए भूमि संसाधनों का संरक्षण सुनिश्चित हो सके।

अध्ययन क्षेत्र

संत कबीर नगर जनपद पूर्वी उत्तर प्रदेश के गोरखपुर मंडल में स्थित एक महत्त्वपूर्ण भौगोलिक इकाई है, जिसका गठन 1997 में बस्ती जनपद से पृथक होकर किया गया। यह जनपद भौगोलिक दृष्टि से $26°45'$ से $27°25'$ उत्तरी अक्षांश तथा $82°05'$ से $83°00'$ पूर्वी देशांतर

के मध्य विस्तृत है, जो इसे मध्य गंगा–घाघरा दोआब क्षेत्र का अभिन्न अंग बनाता है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 1646 वर्ग किमी० है, जो कि उत्तर प्रदेश का 0.68 प्रतिशत है। जनपद का विस्तार उत्तर से दक्षिण में लंबाई 71 किमी० तथा पूर्व से पश्चिम में चौड़ाई 30 किमी० है। इसके उत्तर में सिद्धार्थनगर, पूर्व में गोरखपुर, दक्षिण में अंबेडकर नगर तथा पश्चिम में बस्ती जनपद स्थित हैं, जिससे इसकी क्षेत्रीय स्थिति परिवहन, प्रशासनिक संपर्क एवं आर्थिक गतिविधियों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हो जाती है। वर्तमान में जनपद की प्रशासनिक संरचना के अंतर्गत 3 तहसील, 9 विकासखण्ड, 85 न्याय पंचायत, 794 ग्राम पंचायत और 1727 गाँव हैं, जिसमें 1582 आबाद ग्राम तथा 145 गैर आबाद ग्राम हैं।

जनपद का अधिकांश भाग समतल जलोढ़ मैदान से निर्मित है, जहाँ नदियों द्वारा लाई गई उपजाऊ मिट्टी कृषि विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करती है। कुआनो, आमिया और अन्य छोटी मौसमी नदियाँ यहाँ की जल-निकास प्रणाली को नियंत्रित करती हैं, परंतु वर्षा ऋतु में जलभराव और बाढ़ की समस्या भी उत्पन्न करती हैं।

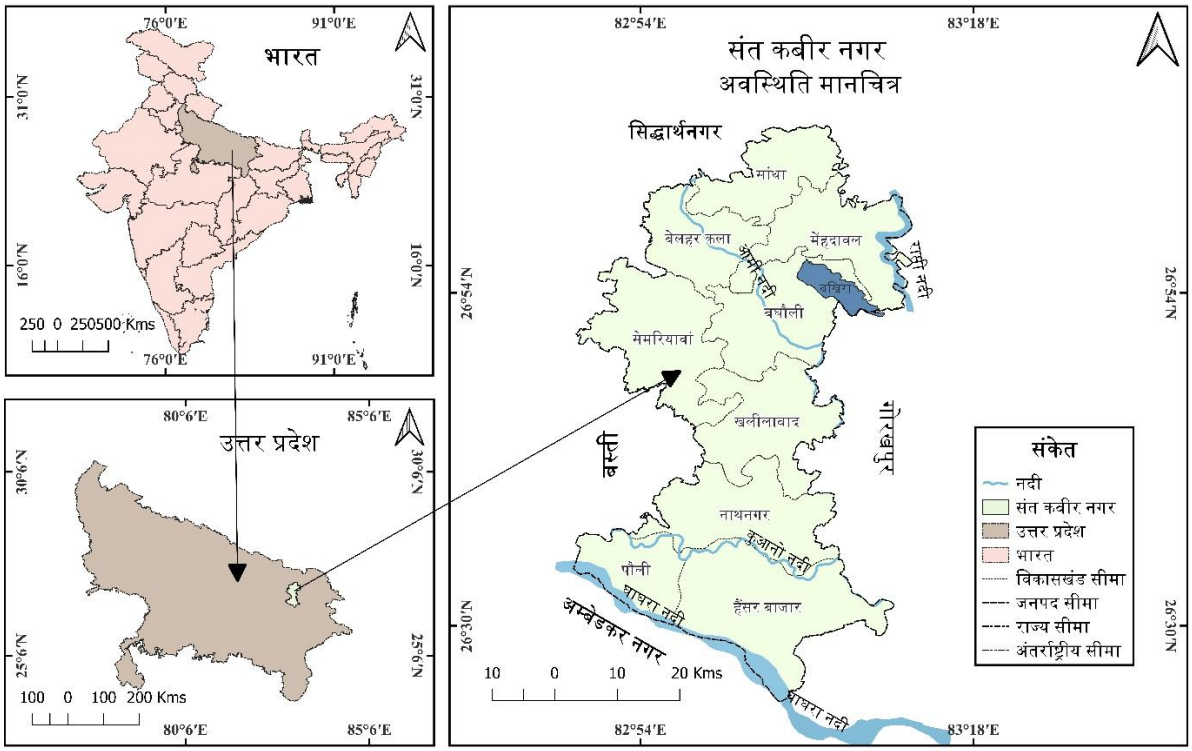

मानचित्र संख्या 1 : अवस्थिति एवं विस्तार, संत कबीर नगर जनपद

अध्ययन क्षेत्र की जलवायु मुख्यतः उपोष्णकटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है, जिसमें ग्रीष्मकाल में उच्च तापमान, वर्षाकाल में पर्याप्त वर्षा तथा शीतकाल में अपेक्षाकृत निम्न तापमान पाया जाता है। प्राकृतिक संसाधनों, विशेषकर कृषि भूमि, जल संसाधन एवं मानव संसाधन की उपलब्धता ने जनपद की जनसंख्या, कृषि प्रतिरूप, भूमि उपयोग परिवर्तन एवं ग्रामीण विकास से संबंधित भौगोलिक अध्ययनों के लिए एक उपयुक्त एवं प्रतिनिधि अध्ययन क्षेत्र माना जा सकता है।

उद्देश्य

अध्ययन क्षेत्र संत कबीर नगर जनपद की भूमि उपयोग परिवर्तन के अध्ययन का प्रयास किया गया है। जनपद की भूमि उपयोग प्रतिरूप में निरंतर परिवर्तन होने के कारण प्रस्तुत शोध प्रपत्र में निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है:-

1. संत कबीर नगर जनपद में परिवर्तित भूमि उपयोग प्रतिरूप का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में विकासखंड स्तर पर भूमि उपयोग परिवर्तन की स्थानिक विषमता का विश्लेषण करना।
3. अध्ययन क्षेत्र में संतुलित एवं सतत भूमि उपयोग नियोजन हेतु उपयुक्त सुझाव प्रस्तुत करना।\

आकड़ों के स्रोत एवं शोध विधितंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में वर्ष 2012-13 एवं 2022-23 का आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। संत कबीर नगर जनपद में भूमि उपयोग परिवर्तन के अध्ययन के लिए मुख्यतः द्वितीयक आँकड़ों का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत जनपद के राजस्व अभिलेखों से प्राप्त भूमि उपयोग से संबंधित वार्षिक आँकड़े प्रमुख स्रोत होते हैं, जिनमें कृषि भूमि, गैर-कृषि उपयोग, बंजर भूमि, चारागाह एवं वन भूमि का विवरण शामिल है। इसके अतिरिक्त जिला सांख्यिकी पत्रिका, राजस्व विभाग द्वारा प्रकाशित भूमि अभिलेख, कृषि विभाग की रिपोर्टे से संबंधित सहायक सूचनाओं का सहारा लिया गया। इन सभी स्रोतों से प्राप्त आँकड़े अध्ययन क्षेत्र की भूमि उपयोग संरचना में समयानुसार हुए परिवर्तनों को स्पष्ट करने में सहायक हैं।

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वप्रथम संत कबीर नगर जनपद को अध्ययन क्षेत्र के रूप में चयनित किया गया। इसके पश्चात् भूमि उपयोग परिवर्तन से संबंधित आवश्यक आँकड़ों का संग्रह चयनित वर्षों के लिए विभिन्न द्वितीयक स्रोतों से किया गया। एकत्रित आँकड़ों को वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध कर भूमि उपयोग की विभिन्न श्रेणियों में क्षेत्रफल एवं प्रतिशत परिवर्तन का आकलन किया गया। समयान्तराल के अनुसार भूमि उपयोग में हुए परिवर्तनों को स्पष्ट करने के लिए तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक विधियों का प्रयोग किया गया। जहाँ आवश्यक हुआ, वहाँ सरल सांख्यिकीय तकनीकों जैसे प्रतिशत परिवर्तन एवं प्रवृत्ति विश्लेषण का उपयोग किया गया। अंततः प्राप्त निष्कर्षों को भौगोलिक, सामाजिक-आर्थिक एवं विकासात्मक संदर्भों के रूप में व्याख्या किया गया।

संत कबीर नगर जनपद में भूमि उपयोग परिवर्तन

अध्ययन क्षेत्र में समय के साथ-साथ जनसंख्या वृद्धि, कृषि तकनीकों में परिवर्तन, नगरीकरण, आधारभूत संरचनाओं का विकास तथा नीतिगत हस्तक्षेप भूमि के उपयोग स्वरूप को निरंतर प्रभावित करते हैं। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश का संत कबीर नगर जनपद भी भूमि उपयोग परिवर्तन की गतिशील प्रक्रिया से गुजर रहा है। पारंपरिक कृषि प्रधान भूमि उपयोग अब क्रमशः आवासीय विस्तार, वाणिज्यिक गतिविधियों, परिवहन मार्ग तथा अन्य गैर-कृषि प्रयोजनों की ओर उन्मुख होता दिखाई दे रहा है।

संत कबीर नगर जनपद की भौगोलिक स्थिति, उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी, सिंचाई सुविधाएँ तथा ग्रामीण-प्रधान जनसंख्या संरचना इसे कृषि के लिए अनुकूल बनाती रही हैं। किंतु हाल के दशकों में जनसंख्या दबाव, आजीविका के विविधीकरण, कस्बों एवं सेवा केंद्रों के विकास तथा सड़क एवं बाजार संपर्क में वृद्धि के कारण भूमि उपयोग प्रतिरूप में उल्लेखनीय परिवर्तन परिलक्षित हो रहा है। कृषि भूमि का सिकुड़ना, बसावट क्षेत्र का विस्तार तथा परती एवं अन्य उपयोग श्रेणियों में परिवर्तन इस जनपद की उभरती हुई भौगोलिक वास्तविकता को दर्शाते हैं। इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत अध्ययन संत कबीर नगर जनपद में भूमि उपयोग परिवर्तन की प्रकृति, प्रवृत्तियों तथा उनके भौगोलिक निहितार्थों को स्पष्ट करने का प्रयास करता है, जिससे भविष्य की योजना-निर्माण प्रक्रिया के लिए ठोस आधार उपलब्ध कराया जा सके।

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग प्रतिरूप

भूमि उपयोग से अभिप्राय उस प्रक्रिया से है, जिसमें मानव अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भूमि की सतह का विभिन्न रूपों में प्रयोग करता है।

तालिका संख्या 1

संत कबीर नगर जनपद में भूमि उपयोग (2012-13 एवं 2022-23)

क्र.सं.	भूमि उपयोग की श्रेणी	2011-12		2021-22		दशकीय अन्तर	
		क्षेत्रफल (हेक्टे. में)	क्षेत्रफल (% में)	क्षेत्रफल (हेक्टे. में)	क्षेत्रफल (% में)	क्षेत्रफल (हेक्टे. में)	क्षेत्रफल (% में)
1.	वन	4374	2.50	4361	2.56	-13	-0.30
2.	कृष्य बेकार भूमि	2487	1.42	2175	1.28	-312	-14.34
3.	वर्तमान परती	7910	4.53	4549	2.67	-3361	-73.72
4.	अन्य परती	2654	1.52	7326	4.31	4672	63.77
5.	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि	1781	1.02	7667	4.51	5886	76.77
6.	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि	29350	16.79	25934	15.24	-3416	-13.17
7.	चारागाह	119	0.07	884	0.52	765	86.53
8.	उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल	4869	2.78	3211	1.89	-1658	-51.63
9.	शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल	121266	69.37	113990	67.02	-7276	-6.38
कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल		**174810**	**100**	**170097**	**100**	**-4713**	**-2.70**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, 2013 एवं 2023, शोध छात्र द्वारा परिगणित।

तालिका में प्रस्तुत आँकड़े संत कबीर नगर जनपद में 2011–12 से 2021–22 के मध्य भूमि उपयोग प्रतिरूप में हुए परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करते हैं। इस अवधि में जनपद का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 174810 हेक्टेयर से घटकर 170097 हेक्टेयर रह गया, जो लगभग 2.70 प्रतिशत की समग्र कमी को दर्शाता है। भूमि उपयोग की विभिन्न श्रेणियों का विश्लेषण करने पर यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि परंपरागत कृषि भूमि पर दबाव बढ़ा है तथा गैर-कृषि एवं अनुपयोगी भूमि श्रेणियों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

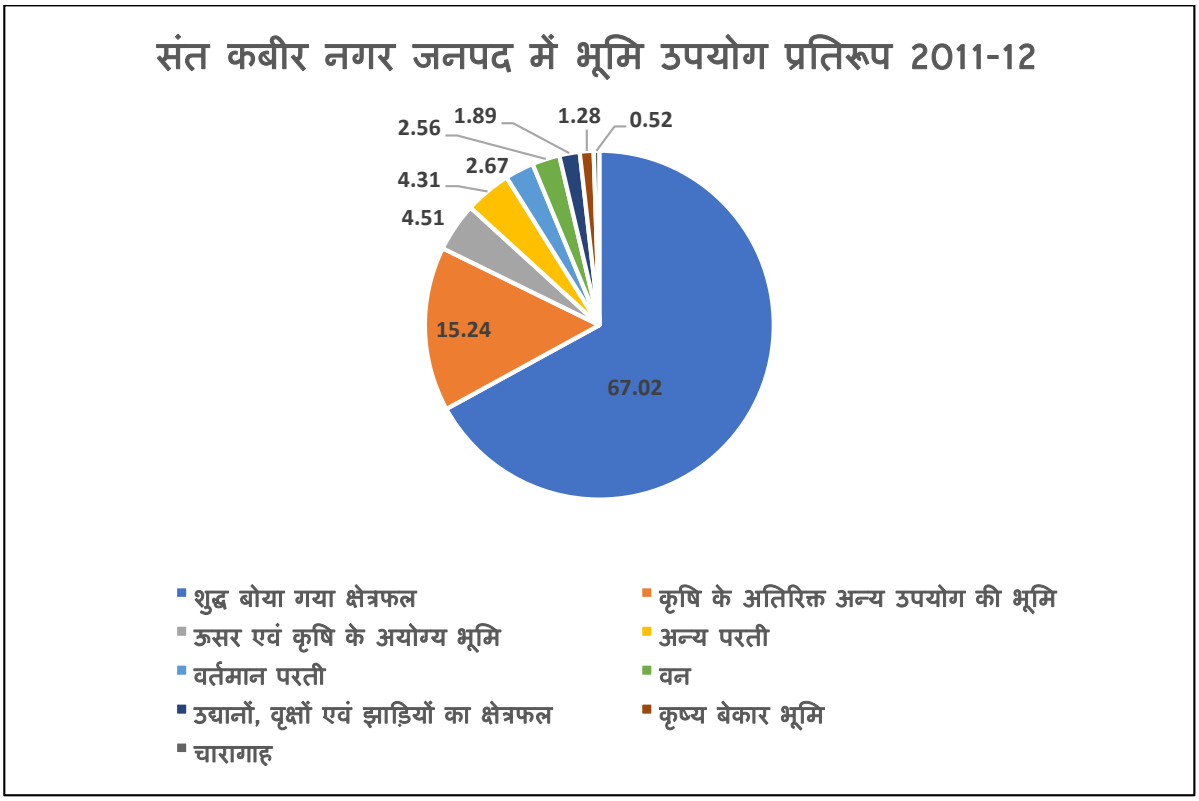

चित्र संख्या 1

जनपद के वन क्षेत्र में क्षेत्रफल की दृष्टि से मामूली कमी (13 हेक्टेयर) के बावजूद प्रतिशत हिस्सेदारी में हल्की वृद्धि देखी गई, जो कुल क्षेत्रफल में कमी का परिणाम प्रतीत होती है। कृष्य बेकार भूमि तथा वर्तमान परती भूमि में क्रमशः 312 हेक्टेयर और 3361 हेक्टेयर की तीव्र गिरावट दर्ज की गई, जिससे यह संकेत मिलता है कि इन भूमियों का अन्य प्रयोजनों में रूपांतरण हुआ है। इसके विपरीत अन्य परती भूमि तथा ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि में अत्यधिक वृद्धि (क्रमशः 4672 हेक्टेयर और 5886 हेक्टेयर) भूमि क्षरण, मृदा लवणता, जलभराव तथा अनियंत्रित मानवीय हस्तक्षेप जैसी समस्याओं की ओर संकेत करती है। कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि में कमी और उद्यान, वृक्ष एवं झाड़ियों के क्षेत्रफल में उल्लेखनीय गिरावट से पारिस्थितिक संतुलन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना परिलक्षित होती है। शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 7276 हेक्टेयर घटकर कुल क्षेत्रफल के प्रतिशत में भी 69.37 से 67.02 तक सिमट गया है, जो जनपद में कृषि विस्तार के सीमित होते जाने और भूमि उपयोग में संरचनात्मक बदलाव का द्योतक है।

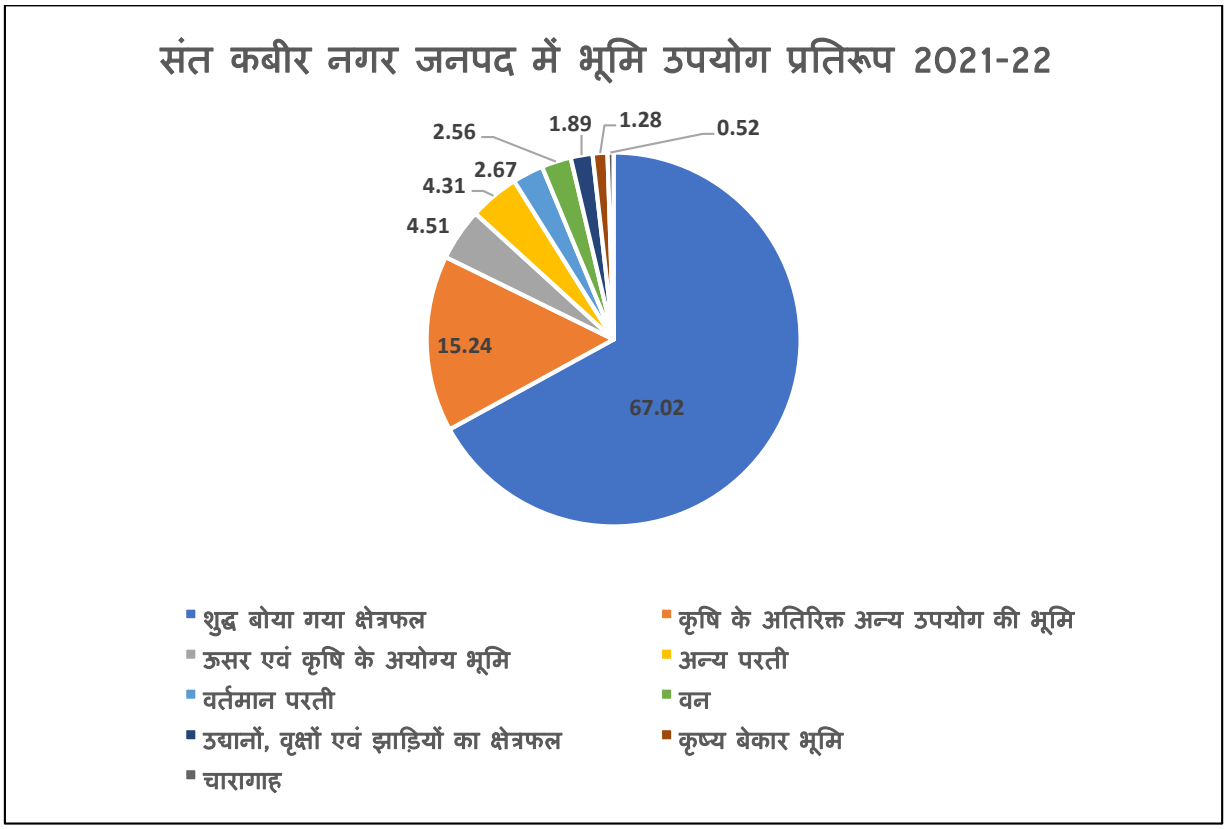

चित्र संख्या 2

समग्र रूप से यह विश्लेषण दर्शाता है कि संत कबीर नगर जनपद में भूमि उपयोग प्रतिरूप तीव्र रूप से परिवर्तनशील है, जहाँ कृषि भूमि का संकुचन और अनुपयोगी अथवा निम्न उत्पादक भूमि का विस्तार भविष्य की कृषि स्थिरता, खाद्य सुरक्षा तथा पर्यावरणीय संतुलन के लिए गंभीर चुनौती प्रस्तुत करता है।

संत कबीर नगर में विकासखण्ड स्तर पर भूमि उपयोग में परिवर्तन का विश्लेषण

प्रतिवेदित क्षेत्रफल का कालानुक्रमिक विश्लेषण

तालिका से स्पष्ट होता है कि संत कबीर नगर जनपद में 2011–12 से 2021–22 के मध्य कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल में कमी दर्ज की गई है। वर्ष 2011–12 में जनपद का कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 174,810 हेक्टेयर था, जो 2021–22 में घटकर 170,097 हेक्टेयर रह गया। यह कमी प्रशासनिक पुनर्मापन, अभिलेखीय संशोधन तथा नगरीय उपयोग में भूमि के स्थानांतरण का परिणाम मानी जा सकती है। विकासखण्ड स्तर पर देखें तो अधिकांश विकासखण्डों - जैसे मेहदावल, बेलहर कला, बघौली, सेमरियांवा, खलीलाबाद, नाथनगर, पौली एवं हैंसर बाजार में प्रतिवेदित क्षेत्रफल में गिरावट दर्ज की गई है, जबकि सांथा विकासखण्ड में हल्की वृद्धि दिखाई देती है। यह विषमता भूमि अभिलेखों की गुणवत्ता, भौगोलिक विस्तार और उपयोग की तीव्रता में अंतर को दर्शाती है।

वन क्षेत्र का विश्लेषण

संत कबीर नगर जनपद के अधिकांश विकासखण्डों में 2011–12 से 2021–22 के बीच वन क्षेत्र के प्रतिशत में अत्यंत सीमित परिवर्तन देखा गया है। उदाहरणस्वरूप, सांथा विकासखण्ड में वन क्षेत्र 32.47% से घटकर 32.22% हो गया, जबकि बेलहर कला में 13.10 से 13.14% तथा खलीलाबाद में 7.91 से 7.93% की अत्यल्प वृद्धि दर्ज की गई। पौली विकासखण्ड एवं नगरीय क्षेत्र में वन क्षेत्र का पूर्ण अभाव यह दर्शाता है कि जनपद में वानिकी का वितरण असमान है। कुल मिलाकर वन क्षेत्र में स्थिरता का संकेत देती है कि न तो बड़े पैमाने पर वनों का विस्तार हुआ है और न ही तीव्र क्षरण, जिससे संरक्षण प्रयासों की प्रभावशीलता स्पष्ट होती है।

तालिका संख्या 2

संत कबीर नगर में विकासखण्ड स्तर पर भूमि उपयोग में परिवर्तन का विवरण 2012 – 2022

विकासखण्ड	प्रतिवेदित क्षेत्रफल (हेक्टे. में)		वन (% में)		कृष्य बेकार भूमि (% में)		वर्तमान परती (% में)		अन्य परती (% में)	
	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22
सांथा	16874	16989	32.47	32.22	4.84	8.44	12.16	11.16	9.11	11.15
मेहदावल	19606	18880	5.69	5.78	3.59	7.33	15.09	11.40	9.72	11.88
बेलहर कला	16196	15489	13.10	13.14	8.47	7.79	16.20	10.62	9.23	10.94
बघौली	19331	18697	14.75	14.79	40.89	25.17	7.17	12.31	14.16	11.23
सेमरियांवा	21799	21672	10.81	10.82	3.99	7.69	6.97	11.93	12.28	11.98
खलीलाबाद	20591	20177	7.91	7.93	5.08	8.62	9.02	10.05	12.62	12.23
नाथनगर	20724	19832	5.92	5.94	6.78	9.91	8.71	11.20	13.14	11.09
पौली	13975	13882	0.00	0.00	18.28	14.15	11.07	9.23	9.26	8.54
हैसर बाजार	23472	22528	9.35	9.38	8.03	10.88	13.57	12.07	10.43	10.92
ग्रामीण	**172568**	**168146**	**100**	**100**	**99.60**	**99.72**	**97.91**	**99.08**	**100**	**100**
नगरीय	**2242**	**1951**	**00**	**00**	**0.40**	**0.27**	**2.09**	**0.92**	**00**	**00**
कुल	**174810**	**170097**	**100**	**100**	**100**	**100**	**7910**	**4549**	**100**	**100**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, 2013 एवं 2023, शोध छात्र द्वारा परिगणित।

कृष्येतर भूमि का विश्लेषण

कृष्येतर भूमि में परिवर्तन जनपद में भूमि उपयोग परिवर्तन की सबसे प्रमुख विशेषता के रूप में उभरता है। सांथा विकासखण्ड में कृष्येतर भूमि 4.84 प्रतिशत से बढ़कर 8.44 प्रतिशत हो गई, वहीं मेहदावल में यह 3.59 से 7.33 प्रतिशत तक पहुँच गई। इसके विपरीत बघौली में कृष्येतर भूमि का अनुपात 40.89 प्रतिशत से घटकर 25.17 प्रतिशत हो जाना एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन को दर्शाता है। यह प्रवृत्ति स्पष्ट करती है कि जनपद के कई भागों में आवासीय विस्तार, सड़क निर्माण, बाजार विकास एवं गैर-कृषि गतिविधियों के कारण कृष्येतर भूमि का विस्तार हुआ है, जबकि कुछ क्षेत्रों में भूमि का पुनः कृषि अथवा अन्य उपयोग में बदलाव भी हुआ है।

वर्तमान परती भूमि का विश्लेषण

वर्तमान परती भूमि के आँकड़े जनपद की कृषि दशा और भूमि उपयोग की स्थिरता को दर्शाते हैं। मेहदावल में वर्तमान परती भूमि 15.09% से घटकर 11.40% हो गई, जो कृषि तीव्रीकरण और भूमि के बेहतर उपयोग की ओर संकेत करती है। इसके विपरीत बघौली में यह 7.17% से बढ़कर 12.31% तथा सेमरियावां में 6.97 से 11.93% हो गई। यह वृद्धि कृषि जोखिम, सिंचाई समस्याओं, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा श्रमिक प्रवासन जैसे कारणों से जुड़ी हो सकती है। जनपद स्तर पर वर्तमान परती भूमि का बढ़ना कृषि क्षेत्र की अस्थिरता को प्रदर्शित करता है।

अन्य परती भूमि का विश्लेषण

अन्य परती भूमि दीर्घकालिक भूमि समस्याओं को प्रतिबिंबित करती है। सांथा विकासखण्ड में अन्य परती भूमि 9.11% से बढ़कर 11.15% हो गई, जबकि मेहदावल में 9.72 से 11.88% और बेलहर कला में 9.23 से 10.94% की वृद्धि देखी गई। इसके विपरीत बघौली तथा नाथनगर में अन्य परती भूमि के प्रतिशत में कमी दर्ज की गई, जो यह संकेत देती है कि कुछ दीर्घकालिक परती भूमि को पुनः उपयोग में लाया गया है। समग्र रूप से अन्य परती भूमि की प्रवृत्ति यह दर्शाती है कि भूमि प्रबंधन की समस्याएँ अभी भी जनपद के कई भागों में विद्यमान हैं।

ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि का विश्लेषण

तालिका संख्या 3 के अनुसार 2011–12 से 2021–22 के मध्य संत कबीर नगर जनपद के अधिकांश विकासखण्डों में ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि के प्रतिशत में वृद्धि दर्ज की गई है। उदाहरणस्वरूप, सांथा विकासखण्ड में यह 8.07 प्रतिशत से बढ़कर 11.07% तथा बेलहर कला में 6.77% से बढ़कर 10.73% हो गया। इसी प्रकार बघौली और सेमरियावां विकासखण्ड में भी इस श्रेणी की भूमि में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इसके विपरीत पौली विकासखण्ड में यह प्रतिशत 18.35 से घटकर 9.24 हो जाना इस तथ्य की ओर संकेत करता है कि कुछ क्षेत्रों में ऊसर भूमि सुधार अथवा पुनः कृषि योग्य बनाने के प्रयास सफल रहे हैं। समग्र रूप से यह प्रवृत्ति मृदा क्षरण, जलभराव तथा भूमि की उत्पादक क्षमता में गिरावट का संकेत करती है।

तालिका संख्या 3

संत कबीर नगर में विकासखण्ड स्तर पर भूमि उपयोग में परिवर्तन का विवरण 2012 2022

विकासखण्ड	ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि (% में)		कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि (% में)		चारागाह (% में)		उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल (% में)		शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल (% में)	
	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22	2011-12	2021-22
सांथा	8.07	11.07	10.84	10.34	5.93	11.32	7.95	11.68	8.75	8.99
मेहदावल	11.01	11.70	10.58	10.03	11.86	11.32	12.18	13.61	11.68	11.63
बेलहर कला	6.77	10.73	9.12	9.25	21.18	11.32	4.68	5.85	9.11	8.88
बघौली	6.94	10.76	12.15	12.59	12.71	11.32	14.11	13.71	10.36	10.26
सेमरियांवा	9.71	11.44	12.07	12.51	4.23	11.32	12.16	12.74	13.45	13.36
खलीलाबाद	8.58	11.17	11.00	10.51	10.16	11.32	11.30	13.21	12.69	12.64
नाथनगर	10.50	11.64	10.25	10.35	16.94	11.32	22.09	10.93	12.55	12.49
पौली	18.35	9.24	10.61	10.06	5.93	9.39	1.45	4.70	7.48	8.01
हैसर बाजार	20.04	12.21	13.34	14.33	11.01	11.32	14.03	13.52	13.98	13.69
ग्रामीण	**99.44**	**99.87**	**98.03**	**98.42**	**99.16**	**99.89**	**99.94**	**99.94**	**98.78**	**98.70**
नगरीय	**0.56**	**0.13**	**1.97**	**1.58**	**0.84**	**0.11**	**0.06**	**0.06**	**1.22**	**1.30**
कुल	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**	**100**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय पत्रिका, 2013 एवं 2023, शोध छात्र द्वारा परिगणित।

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि का विश्लेषण

कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग की भूमि जनपद में गैर-कृषि गतिविधियों के विस्तार को दर्शाती है। 2011–12 की तुलना में 2021–22 में अधिकांश विकासखण्डों में इस श्रेणी की भूमि में हल्का उतार-चढ़ाव देखा गया है। उदाहरणस्वरूप, हैंसर बाजार में यह 13.34% से बढ़कर 14.33% हो गई, जबकि मेहदावल में 10.58 से 10.03% एवं पौली में 10.61 से 10.06% की कमी दर्ज की गई। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि जनपद में गैर-कृषि उपयोग का विस्तार असमान रहा है और यह स्थानीय आर्थिक गतिविधियों, बाजार विकास तथा परिवहन सुविधाओं पर निर्भर करता है।

चारागाह भूमि का विश्लेषण

चारागाह भूमि के आँकड़े जनपद में पशुपालन की स्थिति को स्पष्ट करते हैं। वर्ष 2011–12 में चारागाह भूमि का प्रतिशत विकासखण्डों के बीच अत्यधिक विषमता दर्शाता है, जैसे बेलहर कला में 21.18% एवं नाथनगर में 16.94% है, किंतु 2021–22 में सभी विकासखण्डों

में चारागाह भूमि का प्रतिशत घटकर लगभग 11.32 प्रतिशत पर स्थिर हो जाना एक महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है। यह प्रवृत्ति चारागाह भूमि के पुनर्वर्गीकरण, कृषि अथवा अन्य उपयोग में रूपांतरण तथा पशुपालन के पारंपरिक स्वरूप में परिवर्तन की ओर संकेत करती है।

उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्रफल का विश्लेषण

इस श्रेणी में 2011–12 से 2021–22 के बीच अधिकांश विकासखण्डों में वृद्धि दर्ज की गई है। सांथा विकासखण्ड में यह 7.95% से बढ़कर 11.68% तथा खलीलाबाद में 11.30 से बढ़कर 13.21% हो गया। नाथनगर विकासखण्ड में इस श्रेणी की भूमि में कमी 22.09 से 10.93% यह संकेत देती है कि वहाँ वृक्षावरण पर मानवीय दबाव अपेक्षाकृत अधिक रहा है। समग्र रूप से उद्यानों एवं वृक्षों के क्षेत्रफल में वृद्धि बागवानी गतिविधियों, वृक्षारोपण कार्यक्रमों तथा पर्यावरणीय जागरूकता के प्रभाव को दर्शाती है।

शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल का विश्लेषण

शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल जनपद की कृषि संरचना का सबसे महत्वपूर्ण संकेतक है। तालिका 3 से स्पष्ट होता है कि 2011–12 की तुलना में 2021–22 में अधिकांश विकासखण्डों में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल लगभग स्थिर या हल्की गिरावट हुई है। उदाहरणस्वरूप, मेहदावल में यह 11.68% से घटकर 11.63% तथा नाथनगर में 12.55% से कम होकर 12.49% हो गया। इसके विपरीत पौली विकासखण्ड में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 7.48 से बढ़कर 8.01% हो जाना कृषि विस्तार का संकेत देता है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि कृषि भूमि पर दबाव बढ़ने के बावजूद जनपद में कृषि की आधारभूत संरचना अभी भी बनी हुई है।

संत कबीर नगर जनपद में भूमि उपयोग परिवर्तन से सम्बन्धित समस्याएँ

तालिका 2 और 3 में दिए गए आँकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है की अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग परिवर्तन से सम्बन्धित विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं, जिसमें कुछ प्रमुख इस प्रकार निम्न हैं :-

1. पौली विकासखण्ड और नगरीय क्षेत्र में वन क्षेत्र का पूर्णतः अभाव है। इसके अतिरिक्त मेहदावल और नाथनगर विकासखण्ड में वनों का विस्तार लगभग 6% तक सीमित है जिससे यहाँ पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो सकती हैं।
2. 2012 से 2022 के मध्य बघौली और सेमरियांवा विकासखण्ड में परती भूमि का 7.17% से 12.31 और 6.97% से 11.93% बढ़ना कृषि अस्थिरता को उजागर करता है।
3. सांथा विकासखण्ड में अन्य परती भूमि 9.11% से बढ़कर 11.15% हो गई, जबकि मेहदावल में 9.72 से 11.88% की वृद्धि देखी गई l जो जनपद में भूमि प्रबंधन सम्बन्धी समस्याओं को स्पष्ट करता है।
4. 2011–12 से 2021–22 के मध्य अध्ययन क्षेत्र के अधिकांश विकासखण्डों में ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि के प्रतिशत में वृद्धि दर्ज की गई है। जो सांथा विकासखण्ड में 8.07 प्रतिशत से बढ़कर 11.07% तथा बेलहर कला में 6.77% से बढ़कर 10.73% हो गया। ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि में वृद्धि मृदा क्षरण, जलभराव एवं भूमि की घटती उत्पादक क्षमता को प्रदर्शित करती है।
5. नाथनगर विकासखण्ड में 2012 से 2022 के मध्य उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों का क्षेत्रफल 22.09% से कम होकर 10.93% हो गई। पर्यावरणीय असंतुलन, जैव विविधता के क्षरण, मृदा अपरदन में वृद्धि तथा स्थानीय जलवायु पर प्रतिकूल प्रभाव को दर्शाती है। इसके परिणामस्वरूप कार्बन अवशोषण क्षमता में गिरावट, भू-जल पुनर्भरण में बाधा तथा ग्रामीण आजीविका पर नकारात्मक प्रभाव पड़ने की संभावना बढ़ जाती है।

भूमि उपयोग परिवर्तन से सम्बन्धित समस्याओं के समाधान एवं सुझाव

अध्ययन क्षेत्र में भूमि उपयोग परिवर्तन से सम्बन्धी समस्या के लिए कुछ समाधान एवं सुझाव बताये गये हैं, जो इस प्रकार निम्न हैं :-

1. पौली विकासखण्ड एवं नगरीय क्षेत्र में वन क्षेत्र की कमी को दूर करने हेतु सार्वजनिक भूमि पर सघन वृक्षारोपण, शहरी हरित पट्टी एवं सामुदायिक वन विकास करना आवश्यक है।
2. बघौली एवं सेमरियावां विकासखण्ड की परती भूमि में कमी लाने के लिए मृदा परीक्षण आधारित कृषि, सूक्ष्म सिंचाई तथा बहुफसली खेती को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

3. सांथा एवं मेहदावल विकासखण्ड के अन्य परती भूमि के प्रभावी उपयोग हेतु समेकित भूमि उपयोग योजना, चारागाह विकास एवं मृदा संरक्षण कार्यक्रम अपनाए जाने चाहिए।
4. सांथा एवं बेलहर कला विकासखण्ड में ऊसर एवं अयोग्य भूमि सुधार के लिए जिप्सम उपचार, जल निकासी सुधार तथा क्षार सहनशील फसलों को बढ़ावा आवश्यक है।
5. नाथनगर विकासखण्ड में हरित आवरण में कमी को रोकने हेतु पुनर्वनीकरण, कृषि वानिकी तथा स्थानीय सहभागिता आधारित संरक्षण उपाय अपनाए जाने चाहिए।

निष्कर्ष

संत कबीर नगर जनपद में 2011–12 से 2021–22 के मध्य भूमि उपयोग संरचना में व्यापक तथा असंतुलित परिवर्तन घटित हुए हैं। जनपद स्तर पर शुद्ध बोया गया क्षेत्र एवं कृषि उपयोग की भूमि में निरंतर कमी देखी गई है, जबकि इसके विपरीत अन्य परती भूमि, ऊसर एवं कृषि के अयोग्य भूमि के क्षेत्रफल में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। यह प्रवृत्ति भूमि की घटती उत्पादक क्षमता, मृदा क्षरण तथा जल प्रबंधन की कमजोर स्थिति की ओर संकेत करती है।

विकासखण्ड स्तर पर विश्लेषण से ज्ञात होता है कि अधिकांश क्षेत्रों में वन क्षेत्र लगभग स्थिर अथवा अत्यल्प बना हुआ है तथा कुछ विकासखण्डों, विशेषकर पौली, में इसका पूर्ण अभाव पाया जाता है। साथ ही उद्यानों, वृक्षों एवं झाड़ियों के क्षेत्रफल में गिरावट हरित आवरण के क्षरण और पर्यावरणीय असंतुलन को रेखांकित करती है। दूसरी ओर, चारागाह भूमि में आंशिक वृद्धि पशुपालन गतिविधियों के विस्तार को दर्शाती है, किंतु यह वृद्धि कृषि भूमि के संकुचन की क्षतिपूर्ति करने में पर्याप्त प्रतीत नहीं होती।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता हैं कि जनपद में भूमि उपयोग का रुझान उत्पादक कृषि भूमि से हटकर अनुपयोगी एवं परती श्रेणियों की ओर बढ़ रहा है। यह स्थिति न केवल कृषि स्थिरता और खाद्य सुरक्षा के लिए चुनौतीपूर्ण है, बल्कि दीर्घकाल में पर्यावरणीय संतुलन एवं सतत विकास के लक्ष्यों को भी प्रभावित कर सकती है। अतः संत कबीर नगर जनपद में वैज्ञानिक भूमि प्रबंधन, हरित आवरण संरक्षण तथा कृषि भूमि सुधार की नीतियों को प्राथमिकता दिया जाना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है।

संदर्भ सूची

1. तिवारी आर. सी. एवं बी. एन. सिंह (2018) : कृषि भूगोल, प्रवालिका पब्लिकेशन, इलाहाबाद, पृ.सं. 76.
2. Stamp, L. Dudley, (1931): The Land Utilisation of Britain, London, Geographical Publications Ltd.
3. चौरसिया, महीप एवं प्रमोद कुमार तिवारी (2020) : जौनपुर (उ.प्र.) में भूमि उपयोग प्रतिरूप का एक भौगोलिक अध्ययन, IJRRSS 2020, Volume 8, Issue 3, pp. 161-166.
4. कुमार, शैलेन्द्र एवं शुभम पटेल (2022) : उत्तर प्रदेश में बदलते भूमि उपयोग प्रतिरूप का कृषि पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन, IJNRD.ORG September 2022, Volume 7, Issue 9, pp. 1573-1580.
5. कौशिक, एस. डी. एवं अलका गौतम (2003) : संसाधन भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ. पृ.सं. 603-610.
6. जिला सांख्यिकीय पत्रिका, संत कबीर नगर, 2013 एवं 2023

Copyright & License:

© Authors retain the copyright of this article. This work is published under the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), permitting unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.